डा० कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग

P.G.
SEM-III
Paper-10

Date

प्रश्न:- साकेत के नवम सर्ग में मैथिलीशरण गुप्त जी ने उर्मिला के विरह का पारंपरिक चित्रण किया है? कैसे?

उत्तर:- खड़ी बोली हिन्दी के प्रतिष्ठित कवि मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित 'साकेत' महाकाव्य में साकेत की नायिका उर्मिला का विरह वर्णन है। वह काव्य के भाव पक्षों के हृदयग्राही उदाहरण के रूप में विचार का विषय है। उर्मिला कवियों की उपेक्षिता के रूप में चिंता का विषय रही है। कवीन्द्र रवीन्द्र नाथ ठाकुर के लेख 'काव्येर उपेक्षिता' तथा महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंध 'कवियों में उर्मिला विषयक उदासीनता' पढ़कर गुप्त जी ने अनुभव किया कि सामान्य जनों ने ही नहीं भारत के कवियों ने भी नारी की उपेक्षा की है वे कुछ नारी पात्रों के गुणों - त्याग, बलिदान, पति - निष्ठा आदि के प्रति उदासीन रहे हैं। गुप्त जी पहले हिन्दी कवि तथा 'साकेत' पहला हिन्दी काव्य है जिसमें उर्मिला के प्रति पति प्रेम, त्याग, बलिदान स्वतंत्र व्यक्तित्व, दायित्व एवं देशोद्धार की भावना को प्रस्तुत किया गया है। 'साकेत' के नायक राम नहीं है वह नायिका प्रधान महाकाव्य है और उसका केन्द्रीय पात्र उर्मिला है। उर्मिला अपने मन-मन्दिर में पति लक्ष्मण की प्रतिमा को स्थापित कर विरह में आरती बनकर जलती है :—

"मानस मन्दिर में सती पति की प्रतिमा थाय,
जलती सी उस विरह में बनी आरती आप।"

विरह में आरती के समान जलना और अपने को जलाना उर्मिला के भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पित चित्त को हमारे सामने रखता है।

उर्मिला का विरह वर्णन प्राय: पारंपरिक है। संस्कृत के आचार्यों ने विरह के दश दशाओं की चर्चा की है। यहाँ उर्मिला विरह की

इन सभी दशाओं की चर्चा की है। यह उर्मिला सभी दशाओं की भूमिका में अपने को रखती है —

① अभिलाषा ! —

"अब जो प्रियतम को पाऊँ।
तो इच्छा है उन चरणों के रज में आप रमाऊँ।
आप अवधि बन सकूँ कहीं तो क्या कुछ देर लगाऊँ।
मैं अपने को आप मिटाकर जाकर उनको लाऊँ।

प्रियतम के चरणों की धूल में समाने की अभिलाषा यहाँ ध्यान देने योग्य है।

② चिंता : —

"गाढ़ तिमिर की बाढ़ में डूब पड़ी सब सृष्टि।
मानो चक्कर में पड़ी चकराती है दृष्टि।"

चिंता में दृष्टि का चकराना सहज स्वाभाविक है।

③ स्मृति : —

"चौंक देखा मैंने चुप कोने में खड़े थे प्रिय
माई! मुख लज्जा उसी छाती में छिपायी थी।"

संयोग सुख की स्मृतियाँ उसके हृदय में आनंद की तरंगें उठाती रहती है वर्षा ऋतु की एक रात की मधुर स्मृति उसे आनन्द विभोर कर देती है।

④ गुण कथन ! —

"विविधपन ही था आ रहा जो उन्हीं सा,
यह ध्वनरव ही था, छा रहा जो उन्हीं सा,
प्रिय सदृश्य हँसाओ नीप ही था, कहाँ वे?
प्रकृत सदृश फैले आ रहा जो उन्हीं सा।"

त्रिविध पवन, ध्वनरव नीप, प्रकृति सुकृति में प्रिय के गुण का स्मृतिजन्य उल्लेख वस्तुतः गुण कथन का कारण है।

Date

(5) उद्वेग –

"चन्द्रकांत मणियाँ हटा, पत्थर मुझे न मार।
चन्द्रकांत आवें प्रथम, जो उनके आगार।।"

चंद्रकांत मणियाँ (जो सुखदायी हैं) उनमें उद्वेग का भाव स्पष्ट है।

(6) संप्रलाप या प्रलाप –

"सफरी अरी बता तू तड़प रही क्यों,
निमग्न भी इस सरे में?
जो रस निज गागर में
सो रस गोरस नहीं स्वयं सागर में।"

शफरी अर्थात् मछली को संबोधित कर इस कथन में उर्मिला द्वारा सुधि भूलकर अनर्गल बातें कहने में प्रलाप का भाव स्पष्ट है।

(7) उन्माद :–

"धिक! तथापि हो सामने खड़े?
तुम अलज्ज से क्यों यहाँ अड़े
जिधर पैर दे दीठ फेरती,
उधर मैं तुम्हें ढीठ हेरती।"

उर्मिला द्वारा अपने प्रियतम के लिए अलज्ज से तथा ढीठ शब्दों का अनुचित प्रयोग उर्मिला के मानसिक असंतुलन-उन्माद को सूचित करता है।

(8) व्याधि :–

"तुम अधीर हो क्षुब्ध ताप में
रह सकी नहीं आप में।"

लोकपक्ष की मूर्ति द्वारा कथित इन पंक्तियों में उर्मिला की व्याधि की अंतर्दशा का उल्लेख है।

(9) जड़ता :–

"विजय नाथ की है, सभी कहीं,
तदपि क्यों खड़े हो गए वहीं?

Date

प्रिय प्रविष्ट हो, द्वार मुक्त हैं।
मिलन योग हो निशा युक्त है।"

प्रियतम लक्ष्मण की जड़मूत मूर्ति का अनुभव कर उर्मिला का यह कथन जड़ता दशा- अंतर्दशा का सूचक है।

(10) मृति (मरण)' —

"मुँह दिखाओगी क्या उन्हें अरी
मेरे संशयदा क्यों न तू अरी।"

उन्माद की दशा में उर्मिला ने लक्ष्मण को कुछ अनुचित शब्द कहे थे, संज्ञा प्राप्त होने पर उन शब्दों का ध्यान आते ही अपनी मृत्यु की बात सोचना मरण दशा अंतर्दशा का परिचायक है।

सारत: हम देखते हैं कि गुप्त जी ने परंपरा से प्रभाव ग्रहण कर उर्मिला के विरह वर्णन को नवीन, रोचक एवं संवेदनशील बनाने का प्रयास किया है। उर्मिला का विरह वर्णन हिंदी साहित्य में अद्वितीय है। उर्मिला विरह की स्थिति में जड़ पिंड मात्र नहीं दिखती अपितु तीव्रता से अपने विरह को व्यक्त करती है, स्मृति, कल्पना और प्रतिक्रिया के माध्यम से विरह को विस्तार देती है।